राज्य अध्याय 3

1	**प्रार्थना करना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता के लिए और उसकी आवाज सुनने के लिए उसके द्वारा मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना*** करे। अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का उपदेश देने के विषय में इस पाठ को प्रभु को प्रतिबद्ध करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) ***(शांत समय)*** **निर्गमन 1–4**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** ***(या*** अपने नोट्स से ***पढ़ें)*** कि आपने दिये गये बाइबल अनुच्छेद (निर्गमन अध्याय 1, 2, 3 और 4) से शान्त समय में क्या सीखा है। अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें और लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) ***(परमेश्वर का राज्य)*** **(3) मत्ती 24:14**

दो–दो करके ***समीक्षा*** करें:

(3) राज्य के सुसमाचार का प्रचार करो। मत्ती 24:14 और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा।

4	**शिक्षा देना** (85 मिनट) ***(यीशु के दृष्टांत)*** **बीज बोनेवाला**

मत्ती 13:3–23 में "बोने वाले का दृष्टान्त" निम्न के विषय में है

परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर का वचन।

"एक दृष्टान्त" एक स्वर्गीय अर्थ के साथ एक सांसारिक कहानी है। यह एक सत्य–जीवन की कहानी या चित्रण है जो एक आध्यात्मिक सत्य को सिखाने के लिए बनाया गया है। यीशु ने परमेश्वर के राज्य के रहस्यों को उजागर करने और लोगों को उनकी स्थिति की वास्तविकता और उनके नवीकरण की आवश्यकता के साथ सामना करने के लिए सामान्य स्थानों और रोजमर्रा की घटनाओं का उपयोग किया।

हम दृष्टान्तों के अध्ययन के लिए छह दिशानिर्देशों का उपयोग करके इस दृष्टान्त का अध्ययन

करेंगे (देखें नियम-पुस्तक 9, अनुपूरक 1)।

पढ़िए मत्ती 13:1-23, मरकुस 4:1-20 और लूका 8:1-15।

---

1. दृष्टान्त की प्राकृतिक कहानी को समझें।

परिचय दें। दृष्टान्त को आलंकारिक भाषा में बताया गया है और उसी पर दृष्टान्त का आध्यात्मिक अर्थ आधारित है। इसलिए हम पहले शब्दों और कहानी की पृष्ठभूमि के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन करेंगे।

चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?

ध्यान दें।

बुवाई। गेहूं और जौ को हाथ से बोया जाने का रिवाज था।

मार्ग। हाथ से बुवाई करने से यह अपरिहार्य हो गया कि बीज का एक हिस्सा उस मार्ग के किनारे गिर गया, जिस पर से बोने वाला व्यक्ति खेत से होकर जा रहा था। मार्ग की जुताई नहीं की गई थी और कई पाँव उसके ऊपर चले थे, जिससे कि मिट्टी उसके अंदर तक कुछ भी गिरने के लिए अति कठोर थी।

चिड़ियाँ। पक्षियों को नई खेतों में आना पसंद है जिनमें हाल ही में बीज बोया गया हो, क्योंकि वहाँ खाने के लिए भोजन होता है। मत्ती एक शब्द का उपयोग करता है जो कहता है कि पक्षियों ने 'बीज को चुग लिया'।

पथरीली भूमि। कुछ बीज पथरीली भूमि पर गिरे। यह फिलिस्तीन और आसपास के देशों की विशेषता है कि इसकी कृषि योग्य मिट्टी का काफी भाग चट्टान की परतों के ऊपर पाया जाता है। मिट्टी की केवल एक पतली परत पथरीली भूमि को ढाँपती है। इस प्रकार पौधों को मजबूती नहीं मिल सकती है। तेज धूप में वे जल्दी झुलस जाते हैं।

काँटे। कुछ बीज काँटों के बीच गिर गए। गेहूँ की तुलना में काँटें और जंगली घास आमतौर पर तेजी से बढ़ते हैं। वे पानी और धूप को लूट लेते हैं कि पौधे का दम घुट जाए।

अच्छी मिट्टी। कुछ बीज अच्छी मिट्टी पर गिर गए। "अच्छी मिट्टी" मार्ग जितनी कठोर नहीं होती हैय चट्टान की परत पर उथली मिट्टी जैसी नहीं होती है और काँटों और जँगली घास से भरी मिट्टी जैसी बिगड़ी नहीं होती है। अच्छी मिट्टी उपजाऊ होती है और फल पैदा करती है।

सौ, साठ और तीस गुणा। यहाँ तक कि विभिन्न प्रकार की अच्छी और उपजाऊ मिट्टी विभिन्न प्रकार के फलों का उत्पादन करती है। दुनिया के अधिकांश भागों में भूमि के एक ही टुकड़े पर भी पैदावार एक समान नहीं होती है।

---

2. तत्काल संदर्भ की जाँच करें और दृष्टान्त के तत्वों को निर्धारित करें।

परिचय दें। *दृष्टान्त* की "कहानी" के संदर्भ में "अस्त" और *दृष्टान्त* का "स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग" हो सकता है। दृष्टान्त का अस्त दृष्टान्त को बताने के *अवसर* को बता सकता है, या दृष्टान्त को बताने के समय *परिस्थितियों* का वर्णन कर सकता है। अस्त आमतौर पर *दृ*

ष्टान्त की कहानी से *पहले* पाया जाता है और स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग आमतौर पर *दृष्टान्त* की कहानी के *पश्चात* पाया जाता है।

खोजें और चर्चा करें। इस *दृष्टान्त* का अस्त, कहानी और स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग क्या है?

ध्यान दें।

(1) दृष्टान्त का अस्त मत्ती 13:1-2, 10-17 में निहित है।

एक नाव। यीशु ने विभिन्न परिस्थितियों में उपदेश दिया और सिखायाः आराधनालय में (मरकुस 1:29), मंदिर में (यूहन्ना 18:20), एक पहाड़ पर (मत्ती 5:1), एक घर में (मरकुस 2:1), समुद्र के किनारे (मरकुस 4:1), रेगिस्तान में (मरकुस 8:1) और यहाँ तक कि एक कब्रिस्तान में भी (यूहन्ना 11:38)। यीशु ने इस दृष्टान्त को एक नाव में बैठे हुए बताया (मत्ती 13:2)।

दृष्टान्त। यीशु ने अपनी शिक्षाओं में विभिन्न प्रकार की आलंकारिक भाषा का उपयोग किया, उदाहरण के लिएः नीतिवचन, उपमा और रूपक। मत्ती अध्याय 13 में उन्होंने सात (या आठ, मत्ती 13:52-53) दृष्टान्तों को बताया!

इस समय तक, यीशु के अनुयायियों में से वे थे जिन्होंने उस पर विश्वास किया था, उसे समझा और उसकी अधिक शिक्षाओं को स्वीकार करने के लिए तैयार थे। लेकिन कुछ अन्य लोग भी थे, जिन्होंने लगातार उसका विरोध किया, उसकी शिक्षाओं के प्रति अपने दिल को कठोर किया और जो कुछ भी उसने कहा, उसे अस्वीकार करने के लिए हमेशा तैयार थे। "एक दृष्टान्त" एक *स्वर्गीय* अर्थ के साथ एक *सांसारिक* कहानी है। दृष्टान्त को समझने के लिए, व्यक्ति को न केवल सांसारिक कहानी को, बल्कि स्वर्गीय अर्थ को भी समझना चाहिए! जो लोग यीशु के प्रति *उत्तरदायी* थे, उन्होंने स्वर्गीय अर्थ को समझा, लेकिन जो लोग यीशु के प्रति अनुत्तरदायी थे, उन्होंने स्वर्गीय अर्थ को नहीं समझा। इस प्रकार, दृष्टान्तों को बताकर, यीशु ने *आगे* उन लोगों के लिए सच्चाई का *खुलासा* किया जिन्होंने उसे और उसकी शिक्षाओं को स्वीकार किया, जबकि उसने *आगे* उन लोगों से सच्चाई *छिपाई,* जिन्होंने लगातार उन्हें और उनकी शिक्षाओं को स्वीकार करने से मना कर दिया था।

परमेश्वर का राज्य। सामान्य तौर पर परमेश्वर का राज्य अनंत काल से अनंत काल तक (भजन संहिता 24:1; 145:13), प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक चीज पर ईश्वरीय राज या प्रभुत्व है। विशेष रूप से, परमेश्वर का राज्य यीशु मसीह के माध्यम से ईश्वरीय राज या प्रभुत्व है (मत्ती 28:18)। राज्य मसीह के उद्धार के पूर्ण किए कार्य (प्रेरितों के काम 2:36) और पवित्र आत्मा के माध्यम से विश्वासियों में उस कार्य के अनुप्रयोग पर आधारित है (रोमियों 14:17)। राज्य विश्वासियों के दिलों में पहचाना जाता है (लूका 17:20-21) और उनके जीवन में क्रियात्मक है। परमेश्वर का राज्य चार दृश्य क्षेत्रों में प्रकट होता हैः आरम्भ से अंत तक विश्वासियों के पूर्ण उद्धार में (मरकुस 10:25-26), पृथ्वी पर एक कलीसिया के रूप में विश्वासियों के संविधान में (मत्ती 16:18-19), मानव समाज के प्रत्येक पहलू में विश्वासियों के अच्छे कार्यों (प्रभाव) में (मत्ती 25:34-40), और अंत में छुड़ाए हुए ब्रह्मांड या यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में (1 कुरिन्थियों 15:24-26)।

परमेश्वर के राज्य के रहस्यों का ज्ञान। शब्द "गुप्त" या "रहस्य" (मत्ती 13:10-11; रोमियों

16:25–26; इफिसियों 3:2–12; कुलुस्सियों 2:2–3) का आम तौर पर अर्थ होता है, कुछ ऐसा जिसे हर कोई नहीं जानता या जानने की आवश्यकता नहीं है। जब तक कोई रहस्य *प्रकट* नहीं होता है, उसे जाना नहीं जा सकता है। यीशु अपने लोगों पर परमेश्वर के राज्य के रहस्यों को प्रकट करता है और इसलिए वे उन्हें जानते और समझते हैं। "परमेश्वर के राज्य के रहस्य" वे संदेश हैं जो परमेश्वर यीशु मसीह के प्रथम आगमन और विशेष रूप से राज्य के दृष्टान्तों के उसके प्रचार के माध्यम से प्रकट करता है। रहस्य बताते हैं कि परमेश्वर कौन है, परमेश्वर की योजना क्या है और कैसे परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग उसके शासन के अधीन होकर रहें। मुख्य संदेश यह है कि यीशु मसीह लोगों के पापों के लिए मर गया, ताकि जो कोई भी यीशु मसीह पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।

परमेश्वर के राज्य के रहस्यों का ज्ञान केवल शिष्यों को ही क्यों दिया गया है और अन्यों को नहीं? क्या यह बहुत अनुचित नहीं है? यीशु राज्य के इन रहस्यों को प्रकट नहीं करता है, अर्थात्, नए नियम के संदेश का अर्थ, हर किसी पर। न केवल संदेश की सामग्री महत्वपूर्ण है, परन्तु मन और हृदय की स्थिति और व्यवहार भी है। हालाँकि बहुत से लोग सुसमाचार और नए नियम के संदेश को सुनते हैं, वे उसे मानना नहीं चाहते हैं और वे परमेश्वर की ओर मुड़ना नहीं चाहते हैं। कारण यह है कि कुछ लोगों ने परमेश्वर और उसके वचन के विरुद्ध अपने हृदय को कठोर कर दिया है! ऐसे लोग हैं, जिन्होंने अपने हृदयों को इतने लंबे समय से कठोर किया हुआ है कि वे अब समझ नहीं सकते, पश्चाताप और विश्वास नहीं कर सकते हैं (इब्रानियों 6:4–8; 10:26–31)!

यीशु मत्ती 13:13–15 के शब्दों को भविष्यद्वक्ता यशायाहए पुराने नियम से उद्धृत करता है। यशायाह 1:2–4 में लिखा है कि इस्राएल के वंश ने परमेश्वर का विरोध किया। वे अपने मालिक को नहीं जानते थे और उन्होंने परमेश्वर के वचनों को नहीं माना। वे कुकर्मी थे भ्रष्ट थे और उन्होंने परमेश्वर से मुँह मोड़ लिया था। फिर इसके पश्चात परमेश्वर का न्याय आ गया। यशायाह 6:9–10 में परमेश्वर कहता है "इन लोगों का हृदय निर्दयी कर; इनके कानों को बहरा कर और इनकी आँखें बंद कर दे। अन्यथा वे अपनी आँखों से देख सकते हैं, अपने कानों से सुन सकते हैं, अपने हृदय से समझ सकते हैं, और मुड़ सकते और चंगे हो सकते हैं।" परमेश्वर के ये शब्द *न्याय के शब्द* हैं। अपनी पसंद से इस्राएल के लोगों ने परमेश्वर के विरुद्ध अपने हृदय को कठोर बना लिया था। पुराने नियम के समय के इस्राएलियों ने मिस्र से अपने निर्गमन के दौरान बहुत सारे चमत्कार *देखे थे*। और नए नियम के काल के इस्राएलियों ने अपनी आँखों से यीशु के बहुत सारे चमत्कार देखे। और फिर भी परमेश्वर में विश्वास नहीं किया!

इसलिए <u>परमेश्वर ने उन्हें वही बनने दिया जो वे बनना चाहते थे</u>। परमेश्वर ने उनकी आँखों को और भी कस कर बंद कर दिया! इस्राएलियों ने परमेश्वर के शब्दों को सुना –उन्होंने दस आज्ञाओं और भविष्यद्वक्ताओं के सभी शब्दों को अपने कानों से सुना और फिर भी वे परमेश्वर के आज्ञाकारी नहीं हुए! इसलिए परमेश्वर ने उन्हें वही बनने दिया जो उन्होंने बनना चुना था। परमेश्वर ने उनके कान और भी कस कर बंद कर दिए! परमेश्वर ने उन्हें अपने हि तरीके चलाने द्वारा दंडित किया। जो उन्होंने बोया, वह काटा (गलातियों 6:7–8)! उन्होंने

परमेश्वर के विरुद्ध अपने हृदय को कठोर कर लिया और फिर परमेश्वर ने उनके हृदयों को इतना कठोर होने दिया कि वे अब न तो और पश्चाताप कर सकते थे और न ही परमेश्वर की ओर मुड़ सकते थे! यह एक भयानक न्याय था! इसीलिए बाइबल में कई बार परमेश्वर ने चेतावनी दी है, "यदि आज तुम उसका शब्द सुनो, तो अपने मनों को कठोर न करो, जैसा कि क्रोध दिलाने के समय किया था।" (इब्रानियों 3:15)। परमेश्वर की कृपा और धैर्य की ईश्वरीय सीमाएँ हैं। एक व्यक्ति परमेश्वर के विरुद्ध अपने हृदय को इतनी दृढ़ता से और इतने लंबे समय तक कठोर कर सकता है कि वह एक ऐसे बिंदु पर पहुंच जाता है जहाँ से कोई वापसी नहीं होती। इस धमकी का उद्देश्य लोगों को उनके पश्चाताप और विश्वास को स्थगित न करने के लिए चेतावनी देना है। हर कोई जो गंभीरता से पश्चाताप करता और विश्वास करता है उसे डरने की आवश्यकता नहीं है कि उसका हृदय कठोर हो जाएगा।

यीशु नए नियम में लोगों का न्याय उसी प्रकार क्यों करता है जैसे कि पुराने नियम में परमेश्वर?

इससे पहले कि यीशु ने बीज बोनेवाले के दृष्टांत को बताया, कई फरीसियों ने भी यीशु के चमत्कारों को देखा, परन्तु उन्होंने यीशु पर विश्वास करने से इनकार कर दिया। उन्होंने सुसमाचार *सुना,* परन्तु अपने पाप से परमेश्वर की ओर मुड़ने से इनकार कर दिया। इसके बजाय, उन्होंने यीशु की आलोचना की और आरोप लगाया। तब उन्होंने यीशु को मारने की साजिश रची और उसके काम को शैतान का काम बताया। इन फरीसियों का यीशु के प्रति गलत रवैया था। उन्होंने यीशु के विरुद्ध अपने हृदयों को बार-बार कठोर किया। और इसलिए वही न्याय उन पर आ पड़ा। उन्होंने परमेश्वर के विरुद्ध लगातार अपने हृदयों को कठोर किया था और अब परमेश्वर ने उनके हृदयों को इतना कठोर होने दिया कि वे अब न तो समझ सकते थे, न पश्चाताप या परमेश्वर की ओर मुड़ सकते थे! उन्हें अब बचाया नहीं जा सकता था (मत्ती 11:19,20; 12:2,10,14,24,31,39! वे परमेश्वर की कृपा और धैर्य की सीमा का उल्लंघन कर चूके थे (सीएफ. उत्पत्ति 6:3)!

क्या आज यीशु हम मसीहियों का उसी प्रकार से न्याय करेंगे? हाँ। इसीलिए यीशु बीज बोनेवाले के दृष्टांत को बताता है! प्रत्येक व्यक्ति जिम्मेदार है कि वह परमेश्वर के वचन के प्रति क्या प्रतिक्रिया देता है। यदि हमारा रवैया फरीसियों के समान है और हम लगातार यीशु की आलोचना करते हैं या बार-बार वह मानने से इनकार करते हैं जो वह कहता है, तो हमारे हृदय भी कठोर कर दिए जाएंगे। तब हम अंततः परमेश्वर के राज्य को नहीं देख पाएँगे और न ही परमेश्वर के शब्दों को और समझ पाएँगे।

हालाँकि, हम में से हर एक जो परमेश्वर के वचन को गंभीरता से सुनना और समझना चाहता है, उसे कुछ भी भय रखने की आवश्यकता नहीं है। हर अच्छा और साफ हृदय परमेश्वर के वचन का प्रतिउत्तर देगा, बढ़ेगा और फल देगा! हर कोई जो यीशु का अनुसरण करना जारी रखता है, वह परमेश्वर के राज्य के रहस्यों को भी जानेगा (अर्थात, नए नियम के संदेश को समझेगा)! हर कोई जो परमेश्वर और परमेश्वर के वचन के विरुद्ध अपने हृदय को कठोर करता है, वह अंततः इतना कठोर हो जाएगा कि वह परमेश्वर के वचन को और अधिक नहीं सुन सकेगा। परन्तु हर कोई, जो यीशु मसीह को अपना हृदय देता है और परमेश्वर के वचन का प्रतिउत्तर देना जारी रखता है, परमेश्वर के वचन को समझेगा, बढ़ेगा

और फल देगा! (नीतिवचन 1:22-33; 4:23; 23:26; मत्ती 7:24-27)। परन्तु प्रत्येक व्यक्ति जो परमेश्वर और परमेश्वर के वचन के विरुद्ध अपने हृदय को कठोर करता है, अंततः इतना कठोर हो जाता है कि वह परमेश्वर के वचन को सुन या समझ सकता है।

(1) दृष्टान्त की कहानी मत्ती 13:3-9 में निहित है।

(2) दृष्टांत का स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग मत्ती 13:18-23 में निहित है। देखें बिंदु 6।

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

परिचय दें। यीशु ने कोई भी आध्यात्मिक महत्व रखने के लिए दृष्टान्त की कहानी में प्रत्येक विवरण देने का आशय नहीं किया था। दृष्टांत की कहानी में प्रासंगिक विवरण वे विवरण हैं जो केंद्रीय बिंदु या मुख्य विषय या दृष्टांत के पाठ को सुदृढ़ करते हैं। इसलिए, हमें दृष्टांत की कहानी के प्रत्येक विवरण के लिए स्वाधीन आध्यात्मिक महत्व का वर्णन नहीं करना चाहिए।

खोज और चर्चा करें। इस दृष्टांत की कहानी के विवरणों में से कौन से वास्तव में आवश्यक या प्रासंगिक हैं?

ध्यान दें।

क्या मत्ती 13:3-23 एक ऐतिहासिक घटना है, एक रूपक है या एक दृष्टांत है? प्रासंगिक विवरणों की पहचान करने के लिए उत्तर के महत्वपूर्ण परिणाम होंगे। ये वचन किसी ऐतिहासिक घटना का वर्णन नहीं करते हैं। परन्तु क्या यह रूपक है या दृष्टांत है?

"एक रूपक" एक विस्तारित तुलना है, जिसमें रूपक के कई तत्व कई सत्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं (उदाहरण के लिए यूहन्ना 10:1-16; यूहन्ना 15:1-17)। "एक दृष्टांत" एक सच्ची कहानी है, जबकि एक रूपक को ऐसा होने की आवश्यकता नहीं है। हालांकि दोनों का मुख्य विषय हो सकता है, दृष्टांत एक सैद्धांतिक बात बनाने के लिए बनाया जाता है, जबकि एक रूपक को कई संबंधित या असंबद्ध सत्यों को सिखाने के लिए भी बनाया जा सकता है।

मत्ती 13:3-23 में ऐसा लगता है कि कहानी दृष्टांत के बजाय एक रूपक है, क्योंकि चार प्रकार की मिट्टी के विषय में मसीह की व्याख्या में, वह कहानी में लगभग प्रत्येक बिंदु का आध्यात्मिक अनुप्रयोग करता हैः "बीज" बाइबल के संदेश को दर्शाता है। "पक्षी" शैतान को दर्शाते हैं। "कठोर मिट्टी" कठोर हृदय को दर्शाती है, आदि।

फिर भी, बीज बोनेवाले की कहानी एक दृष्टांत है, क्योंकि स्पष्टीकरण स्पष्ट रूप से एक ही विषय को इंगित करता है। विषय है, "एक व्यक्ति के जीवन में परिणाम उसके द्वारा परमेश्वर के वचन को दी गई प्रतिक्रिया पर निर्भर करता है। और एक व्यक्ति द्वारा परमेश्वर के वचन को दी गई प्रतिक्रिया उसके दिल की स्थिति और रवैये पर निर्भर करती है।" यीशु ने जानबूझकर उस मुख्य संदेश (केवल, एक प्रकार की मिट्टी अच्छी है) को मजबूत करने के लिए दृष्टांत की कहानी में कई विवरण (चार प्रकार की मिट्टी) तैयार किए। यीशु कहानी का निर्माता है और केवल उसके पास अपनी कहानी के कई विवरणों को विशिष्ट अर्थ देने की बुद्धि और अधिकार है। यह तथ्य, हालांकि, मसीहियों को बाइबल में अन्य दृष्टांतों की कहानियों में

<u>विवरणों को एक विशिष्ट अर्थ देने का अधिकार नहीं देता है</u>। यीशु ऐसा नहीं करता है! बाइबल में लगभग प्रत्येक शब्द में आध्यात्मिक अर्थ खोजने और जानने का प्रयास करना "रूपक बनाना" है।

रूपक बनाना। यद्यपि थ०मस एक्विनास (1227–1274) ने अन्य मूल्यवान चीजें लिखी हैं, वह इस दृष्टांत को एक अर्थ देता है जिसे परिणामस्वरूप संदर्भ से नहीं निकाला जा सकता है और इसलिए उसे अस्वीकार कर दिया जाना चाहिए। उसने दृष्टांत की व्याख्या इस प्रकार कीरू "दृष्टांत आध्यात्मिक जीवन में तीन गुना पूर्णता का चित्र हैः *तीस* गुना सामान्य और औसत आध्यात्मिक प्राप्ति को दर्शाता है। *साठ* गुना उन लोगों को दर्शाता है जो उससे कहीं अधिक प्राप्त करते हैं। जबकि *सौ* गुना उन लोगों को दर्शाता है जिन्होंने अपने आध्यात्मिक जीवन में बहुत आगे तक की प्रगति की है कि वे परम उद्धार के पूर्वस्वाद का अनुभव लेते हैं।" इस व्याख्या को अस्वीकार किया जाना चाहिए।

बीज। बीज *परमेश्वर के वचन* को दर्शाता है (लूका 8:11; मरकुस 4:14), *राज्य का संदेश* (मत्ती 13:19)। यीशु के स्पष्टीकरण के अनुसार, "बीज" इस दृष्टान्त में एक बहुत ही आवश्यक या प्रासंगिक विवरण है। जब आप प्रचार करते हैं, तो यह आपके शब्दों के प्रति लोगों की प्रतिक्रिया नहीं, बल्कि परमेश्वर के वचन के प्रति आपकी प्रतिक्रिया है जो कि महत्वपूर्ण है! परमेश्वर के वचन को आपके जीवन में कई अलग–अलग तरीकों से बोया जा सकता हैरू अन्य लोग आपके जीवन में परमेश्वर के वचन को आपको प्रचार द्वारा या उसे पढ़ाने के द्वारा बो सकते हैं। आप स्वयं अपने जीवन में परमेश्वर के वचन को सुनने, पढ़ने, ध्यान करने, स्मरण रखने या अपने आप बाइबल का अध्ययन करने के द्वारा बो सकते हैं।

मिट्टी। मिट्टी *एक व्यक्ति के हृदय को दर्शाती है, चाहे मसीही या गैर–मसीही* (मत्ती 13:19)। विभिन्न प्रकार की मिट्टी *विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों* को या परमेश्वर के वचन के प्रति *मानव हृदय के विभिन्न रवैयों* को दर्शाती हैं। हृदय की स्थिति और रवैया उस प्रभाव को निर्धारित करते हैं जो परमेश्वर के वचन का किसी व्यक्ति पर होगा। दृष्टांत का मुख्य संदेश यह है कि षकिसी के हृदय की स्थिति और रवैया उस प्रतिक्रिया को निर्धारित करते हैं जो वह परमेश्वर के वचन के प्रति देता है। और वह परमेश्वर के वचन के प्रति जो प्रतिक्रिया देता है, वह उसके जीवन में परिणाम निर्धारित करती है"। परमेश्वर के वचन के प्रति आप जो प्रतिक्रिया देते हैं वह निर्धारित करती है कि आप फल लाते हैं या नहीं। वह यह भी निर्धारित करती है कि आप कितना फल लाते हैं! इसलिए *मिट्टी की स्थिति* इस दृष्टान्त में एक बहुत ही आवश्यक या प्रासंगिक विवरण लें

बीज बोनेवाला। बीज बोनेवाले के दृष्टांत में यह नहीं बताया गया है कि किसान या बोनेवाला कौन है। परन्तु गेहूं के बीच जंगली पौधों के दृष्टांत में, बोनेवाला स्वयं यीशु है (मत्ती 13:37)। दिन–प्रतिदिन पृथ्वी पर अपनी सेवकाई के दौरान, यीशु मसीह स्वयं अपनी शिक्षाओं को, विशेष रूप से परमेश्वर के राज्य के विषय में अपनी शिक्षाओं को बो रहा था।

हालाँकि, किसान या बोनेवाला कोई भी हो सकता है जो अन्य लोगों को यीशु मसीह के संदेश की घोषणा करता या शिक्षा देता है (मत्ती 10:14)। निःसंदेह, सामान्यतः बोलने में, बोनेवाला महत्वपूर्ण है, परन्तु <u>इस दृष्टांत की व्याख्या में, बोनेवाला एक आवश्यक या प्रासंगिक विवरण नहीं है</u>। स्पष्टीकरण जोर देता है कि परिणाम निर्धारित किया जाता है, बोनेवाले के

द्वारा नहीं, परन्तु परमेश्वर के वचन को ग्रहण करनेवाले या सुननेवाले के हृदय की स्थिति और दृष्टिकोण द्वारा! ग्रहण करनेवाला या सुननेवाला उसके साथ क्या करता जो कुछ भी सुनता है, बहुत महत्वपूर्ण है! मत्ती 13:19 कहता है, "जब कोई भी (किसी भी समय) राज्य के विषय में संदेश *सुनता है*.....।" इस प्रकार व्यक्ति जो परमेश्वर का वचन पढ़ता है, उस पर ध्यान लगाता है या उसका अध्ययन करता है, स्वयं अपने हृदय पर बोनेवाला बन जाता है। वह कैसे सुनता है, अर्थात वह परमेश्वर के वचन पर कैसे प्रतिक्रिया देता है, यह सब उसके जीवन में परिणाम (फल) के लिए महत्वपूर्ण है!

सुनना और समझना। स्पष्टीकरण के अनुसार (मत्ती 13:18-23), परमेश्वर के वचन के प्रति प्रतिक्रिया (प्रतिउत्तर) दृष्टान्त में एक बहुत ही आवश्यक या प्रासंगिक विवरण है। तीन सामान्य अवलोकित सुसमाचार सात महत्वपूर्ण प्रतिक्रियाओं का उल्लेख करते हैं:

- परमेश्वर का वचन (कोई अन्य आध्यात्मिक पुस्तक नहीं) (मत्ती 13:19; मरकुस 4:13)
- सुनना (मत्ती 13:19,23)
- समझना (मत्ती 13:19,23)
- ग्रहण करना (मरकुस 4:16)
- एक स्वच्छ (कुलीन और अच्छे) हृदय में (लूका 8:15)
- प्रतिधारित करना (लूका 8:15)
- दृढ़ता से फसल का उत्पादन करना (लूका 8:15), तीस गुना, साठ गुना और सौ गुना (मरकुस 4:20)।

---

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहचानें।

परिचय दें। दृष्टान्त का मुख्य संदेश या तो स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग में या कहानी से ही मिला है। जिस प्रकार से यीशु मसीह ने स्वयं दृष्टांतों को समझाया या लागू किया है, हम जानते हैं कि हमें दृष्टान्तों की व्याख्या कैसे करनी चाहिए। एक दृष्टांत में सामान्य रूप से केवल एक मुख्य सीख होती है, बनाने के लिए एक केंद्रीय बिंदु। इसलिए, हमें कहानी के प्रत्येक विवरण में एक आध्यात्मिक सच्चाई खोजने का प्रयास नहीं करना चाहिए, बल्कि एक मुख्य सीख की खोज करनी चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

यह संसार के सभी लोगों गैर-मसीही और मसीही के लिए सच है। उनके हृदय की स्थिति और रवैया परमेश्वर के वचन के प्रति उनकी प्रतिक्रिया को निर्धारित करेगा और वह फिर से उनके जीवन में परिणाम का निर्धारण करेगा।

परमेश्वर के वचन का प्रतिउत्तर देना परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग लगातार परमेश्वर के वचन का प्रतिउत्तर देते हैं, अर्थात, बाइबल के सभी आदेशों और शिक्षाओं का।

यह दृष्टांत यह भी सिखाता है कि परमेश्वर के वचन के उपदेशक या शिक्षक को लोगों के हृदयों की विभिन्न स्थितियों और रवैयों के कारण अलग-अलग परिणामों की अपेक्षा करनी

चाहिए। उपदेशक या शिक्षक होते हुए उसके काम का एक हिस्सा फल नहीं देगा – इसलिए नहीं कि वह गलत स्थान पर बुवाई कर रहा है (जो कि इस दृष्टान्त का उद्देश्य नहीं है), परन्तु इसलिए क्योंकि वचन सुननेवालों की स्थिति, रवैया और प्रतिउत्तर इतने अलग हैं! जबकि उसके काम के एक हिस्से के परिणाम नहीं होंगे, "परमेश्वर का वचन कभी भी परमेश्वर के पास खाली नहीं लौटेगा" (यशायाह 55:10-11)!

5. बाइबल में समानांतर और विपरीत पदों के साथ दृष्टांत की तुलना करें।

परिचय दें। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान हैं और उनकी तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सभी दृष्टांतों में सच्चाई के समानांतर या विपरीत सत्य है जो बाइबल के अन्य पदों में पढ़ाया गया है। सबसे महत्वपूर्ण प्रति – पदों को खोजने का प्रयास करें जो हमें दृष्टांत की व्याख्या करने में सहायता करते हैं। हमेशा बाइबल की प्रत्यक्ष स्पष्ट शिक्षा के साथ दृष्टांत की व्याख्या की जाँच करें।

खोजें और चर्चा करें। बाइबल के अन्य पद जो सिखाते हैं, उसकी तुलना उससे कैसे होती है जो बीज बोनेवाले दृष्टांत सिखाता है?

ध्यान दें।

मत्ती 7:24-27। बुद्धिमान और मूर्ख निर्माणकारों के दृष्टांत में जोर परमेश्वर के वचन (यीशु मसीह की शिक्षा) को *अभ्यास में* लाने पर है। परन्तु बीज बोनेवाले के दृष्टांत में जोर परमेश्वर के वचन को दी गई *प्रतिक्रिया के प्रकार* पर है।

मत्ती 13:24-30। गेहूं के बीच जंगली पौधों के दृष्टान्त में, शैतान *जंगली पौधों* (अविश्वासियों अपने झूठ के साथ) को गेहूं (विश्वासियों अपनी सच्चाई के साथ) के बीच *बोता है*। परन्तु बीज बोनेवाले के दृष्टांत में, शैतान उस हृदय से परमेश्वर के वचन को *छीन* लेता है जो परमेश्वर के वचन के साथ कुछ भी नहीं करता है, ताकि व्यक्ति न विश्वास करे और न ही बचाया जा सके (लूका 8:12)।

मरकुस 4:26-29। गुप्त रूप से उगने वाले बीज का दृष्टांत परमेश्वर के वचन को परम्श्वर के राज्य को विकसित करने और अधिक फल देने के लिए संभावित शक्ति देने हेतु *परमेश्वर की जिम्मेदारी या कार्रवाई* पर जोर देता है। परन्तु बीज बोनेवाले का दृष्टांत परमेश्वर के वचन का प्रतिउत्तर देने हेतु *मनुष्य की जिम्मेदारी* पर जोर देता है।

1 कुरिन्थियों 3:6-9। मसीही कार्यकर्ता, चाहे वे खोए हुओं को प्रचार करें या बचाए हुओं को चेला बनाएँ, वे *परमेश्वर के साथी कार्यकर्ता* हैं। *वास्तविक कार्यकर्ता* परमेश्वर है! जबकि मसीही बीज बोते हैं और पौधों की देखभाल करते हैं, यह परमेश्वर है जो विकास और परिणाम देता है!

---

6. दृष्टांत की मुख्य शिक्षाओं को संक्षेप में बताइए।

चर्चा करें। इस दृष्टांत की मुख्य शिक्षाएँ या संदेश क्या हैं? यीशु मसीह ने हमें क्या *जानना* या *मानना* सिखाया और उसने हमें क्या *होना* या *करना* सिखाया?

ध्यान दें।

(1) मुख्य संदेश या केंद्रीय पाठ।

मत्ती 13:3-23 में बीज बोनेवाले का दृष्टान्त "परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर के वचन" के विषय में दृष्टान्त है।

मुख्य संदेश या केंद्रीय पाठ निम्नलिखित है। "आपके हृदय की स्थिति या रवैया, परमेश्वर के वचन के प्रति आपके प्रतिउत्तर को निर्धारित करते हैं। और आप परमेश्वर के वचन को जो प्रतिउत्तर देते हैं, वह आपके जीवन में परिणाम (फल) निर्धारित करता है।"

या "आपके जीवन में परिणाम (फल) परमेश्वर के वचन के प्रति प्रतिउत्तर पर निर्भर करता है, जो आप देते हैं। और आप परमेश्वर के वचन को जो प्रतिउत्तर देते हैं, वह आपके हृदय की स्थिति या रवैये पर निर्भर करता है।"

अपने जीवन के किसी भी दिन प्रत्येक गैर-मसीही या मसीही के हृदय की चार संभावित स्थितियाँ उस दिन परमेश्वर के वचन को दिए गए चार अलग-अलग प्रत्युत्तरों को निर्धारित करती हैं।

(2) "जिसके साथ (बीज) मार्ग के किनारे बोया जाता है"(पद 19)।

वह ऐसा व्यक्ति है जो परमेश्वर के वचन के प्रति अपनी प्रतिक्रिया में बीज पर मार्ग की कठोर मिट्टी के प्रभाव जैसा दिखता है। बीज मार्ग पर पड़ा रहता है जब तक कि पक्षी नहीं आते और उसे खा नहीं लेते हैं।

यह एक <u>असंवेदनशील और कठोर हृदय</u> का चित्र है <u>जो परमेश्वर के वचन का प्रतिउत्तर नहीं देता है</u>। दृष्टांत का यह भाग <u>रवैये और प्रतिउत्तर</u> से संबंधित है। लगातार यह सोचकर कि परमेश्वर के वचन में उसके लिए कुछ महत्वपूर्ण नहीं है, इस व्यक्ति का हृदय अधिक से अधिक विरक्त हो जाता है। संदेश को समझने या पकड़ने का कोई प्रयास न करने से (यशायाह 6:9-10), उसका हृदय कुंठित हो जाता है। लगातार परमेश्वर के वचन पर प्रतिउत्तर नहीं देने से, क्योंकि वह इसे असुविधाजनक मानता है (प्रेरितों के काम 24:25), उसका हृदय और अधिक लापरवाह हो जाता है। परमेश्वर के वचन की लगातार आलोचना करने और उसे अपनी राय में बदलने से (रोमियों 11:7-10; इब्रानियों 3:7-8), उसका हृदय कठोर हो जाता है। संदेशवाहक या संदेश को बार-बार अस्वीकार करने से, क्योंकि वह जो कुछ भी सुनता है उसे पसंद नहीं करता (यूहन्ना 8:37), उसका हृदय शत्रुतापूर्ण हो जाता है। शैतान जानता है कि लोग, जो परमेश्वर के वचन को स्वीकार करते हैं, विश्वास करेंगे और बच जाएँगे (लूका 8:12)। और क्योंकि शैतान लोगों के हृदयों पर परमेश्वर के वचन की सामर्थ और प्रभाव से डरता है, वह हमेशा वह छीनने के लिए तैयार रहता है जो अस्वीकार्य है!

मत्ती 13:3-23 में बीज बोनेवाले का दृष्टान्त "परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर के वचन (बाइबल)" के विषय में दृष्टान्त है।
दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "आपके हृदय की स्थिति और रवैया परमेश्वर के वचन के प्रति उस प्रतिउत्तर को निर्धारित करता है जो आप देते हैं। और आप परमेश्वर के वचन को जो प्रतिक्रिया देते हैं, वह आपके जीवन में परिणाम निर्धारित करती है"।

मुख्य शिक्षा परमेश्वर के वचन (बाइबल के संदेश) को <u>समझने के लिए</u> हर संभव प्रयास करना है (मत्ती 13:23ग) और फिर जब भी आप इसे सुनते हैं, पढ़ते हैं या इसका अध्ययन करते हैं, तो इसे <u>स्वीकार करना</u> है (मरकुस 4:20ख)! आपको तुरंत विरक्तता, शिथिलता या शत्रुता के अपने रवैये से निपटना चाहिए!

(3) "वह जिसके साथ (बीज) पथरीली भूमि में बोया जाता है" (पद 20)।

यह वह व्यक्ति है जिसका परमेश्वर के वचन का प्रतिउत्तर बीज पर पथरीली भूमि के प्रभाव जैसा दिखता है। बीज (पौधा) गहरी जड़ों को विकसित नहीं कर सकता है और जल्द ही सूरज से झुलस जाता है और मुरझा जाता है।

यह <u>आवेगशील और उथले हृदय</u> का एक चित्र है <u>जिसमें परमेश्वर का वचन जड़ नहीं ले सकता है</u>। दृष्टान्त का यह भाग <u>गहराई और अवधि</u> से संबंधित है। यह एक ऐसा व्यक्ति है, जो जल्दी में और परिणामों पर विचार किए बिना और लागत को गिने बिना, क्षण के उत्साहन पर कार्य करता है। जब वह परमेश्वर के वचन को सुनता है, तो वह रोमांचित होता है या उत्साही होता है। परन्तु इस व्यक्ति के पास "कोई जड़ नहीं" है, अर्थात, उसके पास दृढ़ता का अभाव है, सभी परिस्थितियों में परमेश्वर के वचन में बने रहने की क्षमता। वह परमेश्वर के वचन के कारण आने वाली परेशानी और सताव को सहन करने के लिए इच्छुक नहीं है। उसके पास यीशु मसीह के लिए दुःख उठाने हेतु प्रेम का अभाव है (1कुरिन्थियों 13:3)। हालाँकि वह आरम्भ में मसीह का बाहरी रूप से अनुसरण करता है, वह कभी भी मसीह का वास्तविक अनुयायी नहीं है। मसीही धर्म के विषय में उसका अंगीकार उसकी आंतरिक कायलता से बाहर नहीं आता है। वह परमेश्वर के वचन को स्वीकार करने के परिणामों पर विचार करने में विफल रहता है। वह इस तथ्य पर विचार नहीं करता है कि "सच्चा शिष्यत्व" का तात्पर्य आत्म-समर्पण, आत्म-त्याग, बलिदान, सेवा और दुख है। जब परेशानी या सताव आता है, तो वह जल्दी से पतित हो जाता है। मूल शब्द का अर्थ है कि वह जल्दी से पाप में फंस जाता है या प्रलोभित हो जाता है या वह जल्दी से परमेश्वर के वचन से कुपित हो जाता है और इसके परिणामस्वरूप वह उससे ठोकर खा जाता है और गिर जाता है। ऐसे लोगों के उदाहरण हैंरू वह व्यक्ति जो लागत की गणना किए बिना यीशु का शिष्य बनना चाहता है (मत्ती 8:19-20); अमीर युवक जो अपनी दौलत जाने नहीं देना चाहता था (मत्ती 19:16-22); यहूदा इस्करियोती जिसने यीशु को पैसे के लिए धोखा दिया था (मत्ती 26:14-16) और दिमास जो वर्तमान दुनिया से प्यार करता था (2 तीमुथियुस 4:10)।

मुख्य शिक्षा परमेश्वर के शब्द को <u>बनाए रखना</u> है (लूका 8:15ग) और सभी परिस्थितियों में उसकी प्रतीति करना और उसके आज्ञाकारी होना है! परमेश्वर के वचन सुनते ही आपको अपनी प्रवृत्ति से भावनात्मक होने हेतु तुरंत निपटना होगा!

(4) "जिसके साथ (बीज) काँटों में बोया जाता है" (पद22)।

यह वह व्यक्ति है जो परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में बीज पर जंगली पौधों और कांटों के साथ संक्रमित मिट्टी के प्रभाव जैसा दिखता है। बीज (पौधा) दबा दिया जाता है और फलहीन रहता है।

यह <u>विभाजित और पूर्व-व्याप्त हृदय का</u> एक चित्र है <u>जो परमेश्वर के वचन के विरुद्ध पक्षपाती है</u>। दृष्टांत का यह भाग <u>तैयारी और प्राथमिकता</u> से संबंधित है। यह एक व्यक्ति है, जिसने तैयारी नहीं की है और जानबूझकर गलत प्राथमिकताओं को चुनता है। परिणामस्वरूप, उसके हृदय में परमेश्वर के वचन के शांत और गंभीर ध्यान और अनुप्रयोग के लिए कोई जगह या समय नहीं है। वह न केवल परमेश्वर के वचन के लिए अपने हृदय को खोलता है, बल्कि जीवन की चिंताओं, धन की कपटपूर्णता और अन्य चीजों की इच्छाएं के लिए भी अपना हृदय खोलता है जो परमेश्वर को प्रसन्न नहीं करती हैं (लूका 8:14)। चिंताएँ शारीरिक स्वास्थ्य को नष्ट कर सकती हैं और परमेश्वर पर एकाग्रता को रोक सकती हैं (मत्ती 6:25-34)। धन-संपत्ति सभी प्रकार की बुराई की जड़ बन सकती है, जैसे कि निम्नलिखित उदाहरण दिखाते हैंरू अमीर मूर्ख (लूका 12:13-21), अमीर दिखावा और भिखारी लाजर (लूका 16:19-31), अमीर युवा शासक (मरकुस 10:17-23)। "अन्य इच्छाएं या सुख" आपके प्राण को बर्बाद करने वाली उलझनें बन सकते हैंः सुख जो स्वयं में गलत हैंः पियकड़पन, नशा, जुआ, लौटरी, भाग्य वाले खेल, यौन अनैतिकता, आदि। ऐसे सुख जो गलत हो जाते हैं जब व्यक्ति उनका अति-भोग करता है, वे हैंः खाना, पीना, सोना, खेल, मनोरंजन, टीवी देखना, उपन्यास पढ़ना, इंटरनेट या यहाँ तक कि काम भी जब आप हमेशा काम करने की आदत में होते हैं। वह व्यक्ति, जिसका हृदय अन्य चीजों के साथ पहले से ही व्याप्त होता है, कि उसके पास परमेश्वर के वचन के लिए कोई समय या स्थान नहीं होता, वह कभी आध्यात्मिक परिपक्वता के लिए नहीं बढ़ता है और इसलिए वह कभी भी अपने जीवन में "अनन्त जीवन के लिए फल" या "स्थायी फल" नहीं ला सकता है (यूहन्ना 4:36; 15:16)। हृदय की पापी इच्छाएँ, आँखों की वासना और मुँह द्वारा बड़ा-चढ़ा कर बोली बातें कि उसके पास क्या है या क्या करता है या क्या पूरा किया है, ऐसी चीजें हैं जो परमेश्वर से नहीं, बल्कि दुनिया से आती हैं। यह सभी चीजें जाती रहेंगी (1 यूहन्ना 2रू15-17)!

मुख्य शिक्षा <u>अपने हृदय को स्वच्छ, ईमानदार और अच्छा रखना है</u> (लूका 8:15क)। आपको इसे जीवन की चिंताओं, धन के धोखे, दुनिया के सुख और गलत इच्छाओं से मुक्त रखना होगा। आपको अपनी चिंताओं, भौतिकवादी होने की प्रवृत्ति और अपनी गलत इच्छाओं और गलत प्राथमिकताओं से तुरंत निपटना चाहिए।

(5) "वह जिसके साथ (बीज) अच्छी भूमि में बोया जाता है" (पद 23)।

यह वह व्यक्ति है जो परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में बीज पर अच्छी (स्वच्छ और गहरी) मिट्टी के प्रभाव को दर्शाता है। बीज (पौधा) बढ़ता है और बहुत फल देता है।

यह एक <u>अच्छे प्रकार से तैयार किए गए हृदय</u> का चित्र है <u>जो परमेश्वर के वचन का सही तरीके से प्रतिउत्तर देता है और फल लाता है</u>। दृष्टांत का यह भाग प्रेरणा और गुणवत्ता से संबंधित है। यह दृष्टांत का केंद्रीय बिंदु या मुख्य संदेश है।

पहले हृदय के विपरीत, यह व्यक्तिः

- <u>सुनता है</u>
- <u>परमेश्वर का वचन</u>
- उसे <u>समझता है</u> जो वह सुनता है (मत्ती 13:23) और

- उसे स्वीकार करता है (मरकुस 4:20)। वह ऐसा करता है ताकि परमेश्वर का वचन उसे बचा सके और उसे रूपांतरित कर सके (लूका 8:12)।

दूसरे हृदय के विपरीत, जब भी यह व्यक्ति परमेश्वर के वचन को सुनता है, तो वह सबसे पहले इन शब्दों पर विश्वास करने और उनकी आज्ञा मानने की लागत पर विचार करता है। वह लागत को गिनता है, क्योंकि वह विश्वासी बना रहना चाहता है, तब भी जब वह कठिनाइयों या सताव का सामना करता है। वह

- परमेश्वर के वचन को अपने हृदय में गहराई से बनाए रखता है और सभी कठिन परिस्थितियों में उसे पकड़े रहता है (लूका 8:15)।

तीसरे हृदय के विपरीत, यह व्यक्तिः

- अपने हृदय को तैयार और स्वच्छ रखता है और जो कुछ भी परमेश्वर के वचन को दबा सकता है, उससे मुक्त रखता है (लूका 8:15)। उदाहरण के लिए, वह उसे चिंताओं, धन और सांसारिक सुखों से स्वच्छ रखता है।

चौथा हृदय उस व्यक्ति को दर्शाता है, जो अच्छे और वैभवपूर्ण हृदय के साथ परमेश्वर के वचन का प्रतिउत्तर देता हैः सुनता है, समझता है, स्वीकार करता है, कायलता के साथ परमेश्वर के वचन को पकडे रहता है और

- प्रयास और दृढ़ता के साथ फल लाता है (लूका 8:15)। फल जीवन परिवर्तन और आध्यात्मिक विकास हो सकता है (कुलुस्सियों 1:6)। फल अच्छे काम हो सकते हैं (लूका 3:8-14)। फल आध्यात्मिक चरित्र में वृद्धि हो सकती है (गलातियों 5:22-23)। या फल अन्य लोगों के जीवन में एक फलदायक सेवकाई हो सकती है (शिष्य बनाना) (यूहन्ना 15:16)। फलदायकता के स्तर में अंतर (तीस, साठ या सौ गुना) (मत्ती 13:23; मरकुस 4:20) इस तथ्य के कारण है कि सभी मसीही समान रूप से अनुतापी, विश्वसनीय, निष्ठावान, साहसी, नम्र या आज्ञाकारी नहीं हैं।

(6) अन्य सभी दृष्टान्तों को समझने की कुंजी।

मरकुस 4:13 कहता है, "क्या तुम यह दृष्टान्त नहीं समझते? तो फिर और सब दृष्टान्तों को क्योंकर समझोगे?" यीशु सिखाता है कि बीज बोनेवाले का दृष्टान्त यीशु मसीह के अन्य दृष्टान्तों को और पूरी बाइबल को भी समझने की कुंजी है! क्यों? क्योंकि "आपके हृदय की स्थिति या रवैया परमेश्वर के वचन के प्रति आपके प्रतिउत्तर को निर्धारित करता है। और बाइबल में दिए शब्दों को जो प्रतिउत्तर आप देते हैं, वह आपके जीवन में परिणाम निर्धारित करता है!"

इसीलिए नीतिवचन 4:23 कहता है, "सब से अधिक अपने हृदय की रक्षा कर, क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है।" व्यक्ति कैसे अपने हृदय की रक्षा कर सकता है? नीतिवचन 23:26 कहता है, "हे मेरे पुत्र, अपना हृदय मेरी ओर लगा, और तेरी दृष्टि मेरे चाल चलन पर लगी रहे।" केवल जब आपने अपना हृदय और जीवन यीशु मसीह को दिया हुआ हो, तो आप अपने हृदय की रक्षा कर पाएँगे और परमेश्वर के वचन के प्रति सबसे अच्छे प्रतिउत्तर दे पाएँगे!

5	**प्रार्थना** (8 मिनट) ***(प्रतिक्रियाएँ)*** **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

आज आपने जो कुछ सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से ***छोटी-छोटी प्रार्थना करने के लिए*** समूह में ***बारियाँ लें।***
या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट) ***(सौंपा गया कार्य)*** **अगले अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. प्रतिबद्धता। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर "बोने वाले के दृष्टांत" का प्रचार करें, पढ़ाएँ या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **निर्गमन 18, 20, 32 और 33** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. स्मरण करना। **(4) राज्य में सेवा करते हुए कभी पीछे न देखेंः लूका 9:62।**
   पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 1:18-32।**
   बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।